INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

धर्मसत्ता, लोक सत्ता पर भारी
(एक 'स्व–तन्त्र' सामाजिक समीक्षा)
Religious power is heavy on Public power (An independent social Review)

डॉ. राजेन्द्र सिंह
समाजशास्त्र विभाग
लालाराम श्रीदेवी महाविद्यालय,
अतरौली (अलीगढ़)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/09.2022-13992359/IRJHIS2209008

प्रस्तावना :

भारत विश्व सभ्यता का सबसे पुराना मुल्क माना जाता है। यह अन्य देशों पर हमला, धर्मान्तरण और सैनिक मुठभेड़ से बचता रहा है। भारत ने भौतिकता को प्रोन्नत करना लक्ष्य नहीं समझा, आत्मा–विषयक खोज इसका अनोखा एडवेंचर रहा है। पश्चिमी देशों में सभ्यता का विकास देर से हुआ जिन्होने रोल मॉडल समझे जाने वाले भारत के साथ सम्पर्क या अतिक्रमण का भी रिश्ता बनाना चाहा। यूनानी, यवन, हूण, तुर्क, पठान, मुगल, अंग्रेज, डच, फ्रांसीसी, पुर्तगाली, इतालवी एवं अन्य सभ्यताओं के लोगों और विस्तार–वादियों ने भारत आना जारी रखा जिसमें मुगल और अंग्रेज इस देश में पीढ़ियों तक हुकूमत भी करते रहे। सदियों की गुलामी के बाद आजाद देश की जन्म तिथि 15 अगस्त 1947 को तकदीर ने अपने हाथों लिखी।

विदेशी गुलामी से मुक्ति को अंग्रेजी में 'इंडिपेंडेंस' कहा गया जिसका सम्बोधन 'आजादी' 'स्वतन्त्रता' 'स्वाधीनता', स्वराज जैसे कई शब्दों में होता है। भारत को आजादी के अर्थ में स्वतन्त्रता ही मिली है। देश में अपना शासन तन्त्र गढ़ा गया यह तन्त्र ब्रिटिश पद्यति से अहसानमन्द होकर संविधान सभा ने लिया। संविधान, संसद, न्यायपालिका, प्रशासन सहित समाज के कई क्षेत्रों में बर्तानवी गुर्राहट वर्तमान में भी टर्राती है।

'स्वतन्त्रता' में 'स्व' के ऊपर तन्त्र भारी है। तन्त्र वशीकरण यन्त्र के रूप में करोड़ों भारतीयों को समझाता है कि पाँच वर्षों में एक बार वोट पाने वाले उनके स्थाई मुख्तार हैं। अंग्रेजों के बाद शक्ति सम्पन्न, अमीर, हिंसक, तिकड़मबाज और हिकमती लोग लोकतन्त्र की चालक शीट पर बैठ गये जो हत्या, बलात्कार, डकैती, नकबजनी, आर्थिक घोटाले करते–कराते चले आ रहे हैं। कुछ रक्त चूषक लोग कोयला, लोहा, वन उत्पाद, जल आदि सरकारी शह पर लूटते चले जा रहे हैं। उनकी मोटी तोंदें फुलाने को सरकारें 'लोक प्रयोजन' कहती हैं। वे धन कमाने की अकूत डकैती को ही आजादी समझते हैं और इनका विरोध करने वालों को देशद्रोही कह

दिया जाता है।

जिन्होंने 'स्व' तन्त्र गढ़ा वे गुलछर्रे उड़ा रहे हैं और उन्हे जम्हूरियत में विधायक, सांसद, मन्त्री कहते हैं जो अपने 'स्व' के अधीन, समाज और कुदरती दौलत पर डकैती डाल रहे हैं उन्हें उद्योगपति बगैराह कहते हैं और जो 'स्व' के अधीन रहकर अपना 'स्वराज' चला रहे हैं उन्हें आतंकवादी और नक्सलवादी कहा जाता है जिनकी काया से 'स्व' की आत्मा निकाल ली गई है उन्हें राजतन्त्र के अधीन रियादा कहा जाता है जिन्हें स्वराज, स्वाधीन और स्वतन्त्र कुल कुनबे के लोग हिकारत से जनता या अवाम भी कहा करते हैं।

जनता का काम है कि आजादी का झण्डा लाल किले से लेकर पंचायत भवन और सेठ लोगों के कारखानों में फहराता देख कर अदव से झुक जाय, नौकर शाहों, राजनीतिज्ञों और पूंजी–वादी लोक नायकों के सामने उसे अनाज, दूध, फल, दवाईयां, पैट्रोल, खाद–बीज की महंगाईयों तथा भ्रष्टाचार के लिए मुँह पर पट्टी बाँध लेना है। जनता को याद रखना है कि पुरखों ने इससे भी बदतर हालात में गुलामी को आजादी में बदल दिया था परन्तु उसे यह याद नहीं रखना है कि आजादी का एक और अर्थ 'मुक्ति' या 'छुटकारा' से भी है। अवाम को लाल किले से गली, मुहल्लों तक वायदों का कोलाहल थाली, ताली, घण्टी बजाकर सुनना है भले ही सुनते–सुनते पीढ़ियों के कान पक जाँय।

अगर हम अपने पूर्वाग्रहों और दुराग्रहों, पारम्परिक सामाजिक रीति–रिवाजों, मान्यताओं, जातीय गौरव और अभिमान से अलग हटकर देखें तो बिना किसी सन्देह के कहा जा सकता है कि आज भी भारत की बहुसंख्यक मेहनतकश जनता अपनी उन आकाक्षांओं, आशाओं और सपनों से कोसों दूर है, आजादी के बाद बनती रही सरकारों की नीतियों, निर्णय और कार्य योजनाओं के माध्यम से विकास फल समाज के ऊपरी तबके तक ही सीमित होता चला गया और बहुसंख्यक मेहनतकश जनता उनसे वंचित रही।

शासक वर्ग ने स्वतन्त्रता आन्दोलन के घोषित उद्देश्यों तथा संविधान में उल्लिखित मानवीय मूल्यों, सिद्धान्तों, आदर्शों ओर संवेदनाओं को भुला दिया। अभी तक सभी नागरिकों के लिए शिक्षा की सार्वजनिक, मुफ्त, सर्वसुलभ, सार्वभौमिक आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण तथा वैज्ञानिक पद्यति का न तो विकास हो सका और न ही सब के लिए सुलभ कराया जा सका। शिक्षा भी समाज के ऊपरी तबके के लिए सुरक्षित कर दी गई है, जिसके पास जितनी सम्पत्ति होगी उसके बच्चों के लिए शिक्षा की उतनी ही उत्तम व्यवस्था होगी।

वर्तमान में स्थिति यह है कि मजदूर शब्द को ही घिनौना बना दिया गया है उन्हें भारत का नागरिक नहीं बल्कि गुलाम बना दिया गया है, अंग्रेजी हुकूमत दौर में अर्जित अधिकार भी छीन लिए गये हैं उन्हें आत्म–निर्भर बनने की सीख दी जा रही है जबकि वह पूरी तरह से मालिकों के रहमो करम पर निर्भर हैं यहाँ तक कि वे मालिक से सवाल करने, अपनी माँग रखने, सौदेबाजी करने, हडताल करने, आन्दोलन करने, तालाबन्दी करने के अधिकार से भी वंचित कर दिए गये हैं। उनकी जिन्दगी की कीमत पाँच किलोग्राम अनाज निश्चित कर दी गई है, मजदूर शब्द सम्मान जनक के स्थान पर गाली बनकर रह गया है।

कृषि वर्तमान में छोटे किसानों के लिए फायदे की बजाय घाटे और मजबूरी का सौदा हो गया है। नवजवानों को नौकरी, रोजगार और व्यवसाय के अन्य अवसरों से वंचित कर मरने के लिए छोड़ दिया गया है। सरकार ने अपनी जिम्मदारी को पूँजीपतियों और कॉरपोरेट घरानों के हितों तक सीमित कर लिया है; पूरा देश उनके हवाले किया जा रहा है, देश की वृहद आवादी को भाग्य भरोसे छोड़ दिया गया है जो सरकार के इशारे

पर ताली, थाली, ढोलक, झांझ–मजीरा और घण्टा बजा सकते हैं, अन्ध भक्त बनकर दंगा कर सकते हैं, अयोध्या, मथुरा, काशी का नारा लगा सकते हैं लेकिन सरकार के खिलाफ आवाज उठाने, विरोध करने, आन्दोलन, हड़ताल करने अथवा धरना देने का उन्हें अधिकार नहीं है अन्यथा ऐसा करने पर सरकार के पास पर्याप्त पुलिस बल, अर्धसैनिक बल और सैन्य बल मौजूद है जिनके माध्यम से इनके विरोध को कुचला जा सकता है।

स्वतन्त्रता का वास्तविक अर्थ :

आजादी का वास्तविक अर्थ था कि देश में करोड़ों गरीब और अभावग्रस्त जनता की जिन्दगी में बेहतरी के लिए बेहतर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का निर्माण किया जाय जिससे बदहाली और जलालत की जिन्दगी जी रहे करोड़ों लोगों को उससे मुक्ति मिले और वह भी जिंन्दगी के एक सभ्य और जिम्मेदार नागरिक के रूप अपना समुचित योगदान देते हुए आजादी का जश्न मनायें तथा अपने आप पर गर्व कर सकते। आजादी सिर्फ राष्ट्रीय ध्वज फहराना, राष्ट्रगान गाना और प्रसाद ग्रहण करना ही नहीं था बल्कि मनुष्य के रूप में उन्हें गरिमा भी मिलनी चाहिए थी। परन्तु आजादी के साथ ही पूँजीपतियों और उच्च मध्यम वर्ग ने आजादी का अपहरण कर लिया, आजादी को अपना विशेषाधिकार समझा और भारत के बहुसंख्यक अवाम को आजादी के फल से हमेशा ही वंचित रखा। धर्म, संस्कृति, नैतिकता और संविधान में उल्लिखित महान मूल्यों, आदर्शों, सिद्धान्तों, अवधारणाओं और परम्पराओं का गुणगान करते रहने के बावजूद आजादी की रोशनी देश की विशाल आबादी से अब तक दूर है। काफी बड़ी आवादी क्या जाने आजादी की खुशी और क्या जाने तिरंगे की शान।

भारत की विशाल आबादी जानती है तो केवल गरीबी, भुखमरी, अभाव, मंहगाई, शोषण, अपमान, उत्पीड़न, बहिष्कार, विस्थापन और बहाता हुआ खून–पसीना, रोटी न मिलने का दंश, श्रम के शोषण का दंश, अशिक्षा और बीमारी का दंश, फटे–पुराने कपड़े का दंश। जब तक उनकी जिन्दगी से गरीबी, अशिक्षा और गरीबी का दंश। जब तक उनकी जिन्दगी से गरीबी, अभाव, भुखमरी अशिक्षा, बीमारी, बेहतर भविष्य का दुःख दूर नहीं होता तो वह क्या जाने कि आजादी किस चिड़िया का नाम है?

धर्म सत्ता, राज सत्ता पर भारी :

शोषणकारी व्यवस्था की स्थापना के लिए धर्म–सत्ता, राजसत्ता और अर्थ सत्ता की सहभागिता और संश्रय एक ऐतिहासिक सत्य है। राजसत्ता अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए सबसे पहले और व्यापक रूप से धर्मसत्ता को प्रश्रय देती है, धर्म अपने धूर्ततापूर्ण, ईश्वर की परिकल्पना द्वारा अपने जाल में फंसाता है और यह अनवरत प्रयास करता है कि मनुष्य इस जाल से कभी बाहर न निकल सके। विभिन्न कर्म–काण्डों, अनुष्ठानों, प्रवचनों और तथाकथित ईश्वरीय वाक्यों के माध्यम से वह ऐसा मकड़जाल बुनता है कि जनसाधारण उसमें फंसने के बाद जीवन भर घुट–घुट कर मरता रहता है परन्तु उस जाल से बाहर निकलने का रास्ता नहीं खोज पाता, जितना ही वह बाहर निकलने का प्रयास करता है उतना ही वह धार्मिक दलदल में फंसता जाता है और एक दिन उसी में दम तोड़ देता है।

शोषणकारी राजसत्ता को सनातन व्यवस्था के रूप में बनाये रखने के लिए ही राजसत्ता सबसे कठोर कदम उन लोगों के खिलाफ उठाती है जो सत्य को अभिव्यक्त करने का जोखिम उठाते हैं और जनमानस को

गुलामी से निकलने का आह्वान करते हैं ऐसे लोगों के खिलाफ दुश्मन मानकर दण्डात्मक कार्यवाही की जाती है क्योंकि ऐसे लोगों को राजसत्ता चुनौती मानती है।

राजसत्ता की ड्राइविंग सीट पर बैठे लोग इस तथ्य को अच्छी तरह से जानते हैं कि उनकी शक्तियों का मिथ्या प्रदर्शन, धर्मग्रन्थों, प्रवचनों और धार्मिक कर्मकाण्डों पर ही टिका हुआ है जो सत्य का एक साधारण प्रहार भी नहीं झेल सकता। बुद्ध और उनका धम्म, सुकरात, गैलिलीयो, कॉपरनिक्स, ड्यूमो जैसे लोगों को शारीरिक यातनायें ही नहीं झेलनी पड़ी बल्कि उन्हें अपनी जान भी गंवानी पड़ी।

सत्य को उद्घाटित करने के खिलाफ राजसत्ता, धर्मसत्ता और अर्थसत्ता का षड़न्त्र और अमानुषिक कार्यवाही आज भी जारी है। जैसे–जैसे सत्ता की नींव कमजोर पड़ती जाती है और उसके खिलाफ लोग एकजुट होने लगते हैं तो सत्ता की बैचेनी बढ़ने लगती है, एक समय ऐसा भी आता है जब सत्ता अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए अन्तिम दम तक प्रयास करती है और उसके इसी अन्तिम प्रयास के परिणामस्वरूप आतंकवाद का जन्म होता है। आतंकवाद को पालपोष कर बड़ा करने और उसे अपने हित के लिए प्रयोग करने में राजसत्ता, धर्मसत्ता और अर्थसत्ता का संश्रय सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि हर शोषणकारी व्यवस्था इन्ही तीनों के संश्रय से अपने को गति में तीनों बराबर के सहभागी होते हैं।

सामन्तवादी अनुसरण :

'स्व'तन्त्र' भारत के तन्त्र में स्थापित चालक सीट पर बैठा दल अपनी सुख सुविधाओं में कोई कटौती नहीं चाहता हर चालक के पास बंगला, कोठी, घोड़ा–गाड़ी नौकर चाकर, सुरक्षा हर तरह की सुख सुविधा के अलावा भारी वेतन और तरह–तरह से कोटे के नाम पर बहुत सारा धन मिलता है फिर भी उनका पेट नहीं भरता। वेतन बढ़ाने के लिए सत्ता पक्ष के साथ–साथ विपक्ष भी ध्वनिमत से मनमानी पूर्ण एकजुट होकर अपना उल्लू सीधा करने में पीछे नहीं हैं। सरकारी खर्चों पर इधर–उधर की सैर व विदेशों में इलाज कराने में कोई संकोच नही। जितनी बार विजयी हुए उतनी बार की पेंशन सुरक्षित। भ्रष्टाचार के स्वाद में करोड़ों रूपयों के भण्डार का उल्लेख करना उचित नहीं है और घातक हो सकता है जब कि अन्य जन साधारण की सेवानिवृत पर अन्य लोगों को पेंशन की व्यवस्था ही समाप्त। यही है 'स्व' 'तन्त्र'

धर्मसत्ता ही भारत में राजसत्ता को अपना आर्शीवाद दे रही है। वर्तमान में राजसत्ता, धर्मसत्ता के बल पर ही भारत को विश्व गुरू बनाने का सपना साकार करना चाह रही है जो देश के मुखिया के संकेत पर अवाम ताली, थाली, ढोलक और घण्टा बजा रही है, किसी प्रदेश के मुखिया अथवा उसके संकेत पर हैलीकॉप्टरों से कॉंबडियों पर पुष्प वर्षा करना और करवाना, अयोध्या में भव्य एवं विशाल मन्दिर के निर्माण पर एक विशेष बहुसंख्यक जनता को धार्मिक अन्ध–भक्ति की ओर मोड़ना, देश के श्रमिक वर्ग की मेहनत पर निर्भर निठल्ले धर्मसत्तायी लोगों को प्रश्रय देना, अयोध्या के बाद मथुरा, काशी की ओर अवाम का ध्यान आदि जेसे अनेक उदाहरण हैं जिससे स्पष्ट आभाष होता है कि राजसत्ता भारतीय संविधान के बजाय मनुवादी संविधान की ओर महत्वपूर्ण कदम बढ़ा रही है जिससे अवाम अन्धभक्ति में डूबी रहे और धर्मसत्ता के बल पर राजसत्ता का गुणगान करते हुए जय हो, जय हो, जिन्दाबाद–जिन्दाबाद के नारे लगाने के नशे मस्त रहे। जब जनसाधारण का ब्रेन धर्मसत्ता ने हैक कर लिया हो तब धर्मसत्ता उस अवाम पर अपनी मर्जी से अपने हित में शासन करने के लिए 'स्व' 'तन्त्र' है और जब धर्मसत्ता प्रभावी हो तो स्वाभाविक है कि वह राजसत्ता पर भारी पड़ेगी ही।

यही है चहुँमुखी विकास। इसी तरह बनेगा भारत विश्व गुरू।

भारत में धर्मसत्ता के अधीन राजसत्ता का यही हाल रहा, और राजसत्ता मनुवादी संविधान की ओर इसी तरह महत्वपूर्ण कदम बढ़ाती रही तो भारतीय आध्यात्म और वैदिक ज्ञान के साथ योग, भूगर्भ व ज्योतिष विद्या गुरूकुल में ग्रहण की जायेगी जिसका मुख्यालय सम्भवतः ऋषिकेश में होगा और इसकी कमान योग बाबा के रूप में विश्व प्रसिद्ध रामदेव के हाथों में होगी। रामदेव को कौन नहीं जानता जिन्होंने योग में हर मर्ज का इलाज है कह कर पूरी दुनियाँ में अपनी धाक जमा रखी है इसी के परिणामस्वरूप पूरी दुनिया 21 जून को योग दिवस के रूप में अनुलोम–विलोम करती है। यह वही रामदेव हैं जिन्होने एलोपैथी को झुठला दिया, करोड़ों रूपये खर्च कर कड़ी मेहनत से शिक्षा और अनुभव व प्रयोग के बाद डॉक्टर बने लोगों के गाल पर तमांचा मार दिया, योग में हर मर्ज का इलाज बताकर वेशकीमती आयुर्वेद औषधियाँ तैयार कर रखी हैं और उसी क्रम में कोरोना वायरस से निपटने के लिए कोरोनिल गोली भी आनन–फानन में ईजाद कर ली यदि इस गोली को WHO अनुमति दे देता तो कोरोना वायरस सम्भवतः हमारे देश को मानव विहीन कर सकता था। वह तो अच्छा हुआ कि WHO ने रामदेव की बनी गोली कोरोनिल को अनुमति नहीं दी और देश के डॉक्टरों, वैज्ञानिकों के अथक प्रयास से एलोपैथी में ही कोरोना वायरस रोधी टीके बनाकर जनमानस की रक्षा की और आज भी कर रहे हैं।

यह रामदेव वही हैं जिनकी दवाओं का कारोबार सरकार के सानिध्य में फल–फूल रहा है यहाँ तक कि इन्होंने शुद्धतम उपभोक्ता सामग्री का उपक्रम दर्शाकर घी से लेकर लिपिस्टक तक तमाम सामग्री बेचने का कारोबार चला रखा है। यदि सरकार की नजर में रामदेव के योग में हर मर्ज का इलाज और उनके द्वारा निर्मित औषधि मानक में खरी हैं तो सरकार को मँहगी मैकाले शिक्षा पद्यति को बन्द करने में विलम्ब नहीं करना चाहिए और यदि योग में हर मर्ज का इलाज सरकार ने सही मान लिया तो रामदेव को औषधियाँ बनाने की जरूरत ही क्या है? परन्तु सरकार के संरक्षण में औषधियों के निर्माण व बिक्री का व्यापक स्तर पर कारोबार चरम पर है। रामदेव देखने में योगी, शरीर पर वस्त्र योगियों के परन्तु हैं अरबों–खरबों के स्वामी।

योग में हर मर्ज के इलाज का फॉर्मूला ईजाद करने वाले और दूसरी ओर व्यापारिक दृष्टिकोंण से हर मर्ज की औषधि ईजाद करने वाले अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रामदेव को सरकार ने भारतीय शिक्षा परिषद का अध्यक्ष बनाकर मनुवादी संविधान की ओर एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

स्मरण कीजिए जालौर के सुराजा गाँव की घटना जहाँ प्राथमिक पाठशाला के कक्षा तीसरी के छात्र इन्द्रराज जो दलित था को गुरूदेव की मटकी से पानी पीने की सजा मौत मिली। मनुवादी संविधान चाहता भी यही है जो आम्बेडकर ने घोर नफरत से जूझते हुए ऐसे अमानवीय व्यवहार के लिए संविधान में जो प्रावधान कराये वे सब खत्म हो जायें। सम्भावना इस बात की भी है कि इस मनुवादी व्यवस्था को जीवित रखने वाले गुरूदेव को भविष्य में श्रेष्ठ गुरूदेव का दर्जा मिल जाय और शिक्षा बोर्ड का सदस्य भी बना लिया जाय। देश में महंगी शिक्षा से अवाम का आम आदमी परेशान है, सभी लोग शिक्षित होने की दौड़ में शामिल हैं। पिछले कुछ वर्षों में गरीब–गुरूवों के बच्चे भी उच्च पदस्थ अधिकारी बन गये और भविष्य में भी बनेंगे क्योंकि वह शिक्षित के साथ–साथ जागरूक भी हो रहे हैं, उनके पास भी दिमाग नाम की चीज हैं यह मनुवादी संविधान को गवारा नहीं है सामन्तवादी सोच वाले तन्त्र के दल को यही पसन्द है कि इन उच्च पदों पर तो संस्कारवान परिवार के

बच्चें ही अच्छे लगते है, उनमें रूतवा, रौव–दाब की जरूरत होती है। गरीब गुरूवों के बच्चे कहाँ से लायेंगे रौव–रूतवा इसलिए सबको शिक्षा का पाठ से निकालना ही होगा और गाँव–गाँव खुले स्कूल बन्द, एवं गुरूकुल चालू। जहाँ शिष्य, गुरू सेवा की पारम्परिक पद्यति से ही शिक्षा ग्रहण करेगा। वहाँ कौन तबका पढ़ेगा यह बताने की आवश्यकता नहीं है।

जब 'स्व' 'तन्त्र' भारत के लोकतन्त्र में राजसत्ता पर धर्मसत्ता हावी होगी तब तन्त्र के चालक भारतीय संविधान को आच्छादित रख मनुवादी संविधान का प्रबल रूप से पुनः प्रचार–प्रसार करेंगे और फिर अवाम जो तन्त्रशाही सामन्तवादी व्यवस्था से कुलवुला रही है के दिलो दिमाग पर धर्मतन्त्र राज करेगा ही जिसमें युधिष्ठर जूआ खेलते हैं, पत्नी को दांव पर लगाते हैं, सब राजपाट जुए में हार कर दर–दर की ठोकरें खाते हुए भिखारी बन जाते हैं फिर भी धर्मराज हैं उनकी प्रतिष्ठा पर कोई फर्क नहीं पड़ता जिस प्रकार तन्त्र का व्यक्ति अपराध में जेल में रहते हुए भी चुनाव धडल्ले से लड़ता है और विजयी भी होता है भले ही सजा हो जाय परन्तु अन्तिम निर्णय न होने तक उसकी प्रतिष्ठा पर कोई फर्क नहीं पड़ता।

भीष्म पितामह बृहमज्ञानी थे, द्रोण गुरू थे परन्तु दोनों ही, दर्शित दुष्ट एवं अधार्मिक लोगों की तरफ से युद्ध लड़ते हैं क्योंकि धन, पद, प्रतिष्ठा कौरवों के पास थी जबकि पाण्डव भिखारी थे उनके हारने की प्रबल सम्भावना थी इसी क्रम में द्रोण ने गुरू दक्षिणा के नाम पर धूर्तता से हितबद्धता के वशीभूत होकर एकलव्य का अगँठा कटवा लिया क्योंकि वह शूद्र होते हुए भी महान धर्नुधारी था। अर्थात गुरूकुल की शिक्षा होगी जिसमें उच्चवर्गीय गुरू होंगे और उच्च घरानों, राजसत्तात्मक घरानों के शिष्य होंगे बाकी बहुसंख्यक गरीब अवाम भजन कीर्तन, कथा–भागवत, में उछलकूद कर अपने मोक्ष प्राप्ति के आश्वासन में मरती–खपती रहेगी उसे शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार नसीब नहीं होगा और न ही कोई गुरू शिक्षा देने के लिए तैयार होगा।

भय :

धर्मसत्ता केवल उच्च वर्ग की दासी है और राजसत्ता में मौजूद नुमाइन्दों अथवा रह चुके नुमाइन्दों को भी उच्च वर्गीय मानने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए क्योंकि अपवाद छोड़कर सभी इतने सक्षम और समर्थ हैं या हो चुके हैं कि उनकी आने वाली इक्कीस पुस्तें निठल्ले बैठकर भोग विलास एवं ऐस–ओ–आराम की जिन्दगी व्यतीत कर सकती हैं। बताया जाता है कि अमेरिका जो कि विकसित देश है के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा किसी कम्पनी में काम करते हैं जबकि भारत में शायद ही कोई ऐसा उदाहरण हो कि राजसत्ता से बाहर हुआ व्यक्ति अथवा उच्च पदस्थ नौकरशाह कहीं किसी कारखाने अथवा कम्पनी में काम करता हो? उन्हें किसी की चाकरी करने की आवश्यकता भी नहीं क्योंकि वह अकूत धन सम्पदा के मालिक हो चुके होते हैं। राजसत्ता और धर्मसत्ता जहाँ मिलकर खड़ी हो वहाँ अर्थसत्ता का उनके पीछे हाथ जोड़े खड़े रहना स्वाभाविक है।

वर्तमान में बहुसंख्यक जनता के गरीब, पिछड़े, दलित वर्ग से कुछ लोग लाख अवरोधों के बावजूद अपनी काबिलियत के दम पर हर क्षेत्र में पदस्थ होने लगे हैं और होंगे। राजसत्ता, धर्मसत्ता अथवा उच्च वर्ग को यह कतई गवारा नहीं है उन्हें यही डर है कि कहीं यह वर्ग शिक्षा की ओर उन्मुख होता रहा तो वह जागरूक होकर उनके षड़यंन्त्र को विफल कर सकता है, उनके सब करे–धरे पर पानी फेर सकता है। इसी भय के कारण राजसत्ता स्वयं धर्मसत्ता से षड़यंन्त्र कर भारतीय संविधान के बजाय मनु संविधान की ओर महत्वपूर्ण

कदम उठा रही है ताकि राजसत्ता के लिए वोट बैंक की खेती लहलाती रहे और धर्मसत्ता का अपना धन्धा फलता–फूलता रहे। हालांकि भारतीय जनमानस शुरू से ही यह मानने पर मजबूर कर दिया गया है कि जो भाग्य में होगा वही मिलेगा, जितनी सांसें ऊपर वाले ने दी हैं बस उतनी ही मिलेंगी। भविष्य में इसी तरह की शिक्षा के लिए राजसत्ता व धर्मतन्त्र का 'स्व' 'तन्त्र' भारत में मनुवादी संविधान की ओर उठाया जा रहा कदम है जिससे अवाम पुरातन परिपाटी में जीने की आदी बनी रहे। भविष्य में इसका परिणाम भारत के लिए घातक होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. तिवारी कनिका अगस्त 2022
2. जगदीश्वर चतुर्वेदी : सामाजिक समीक्षा अगस्त 2022
3. भगवान प्रसाद सिन्हा : सामाजिक अध्ययन
4. रविशंकर : सामाजिक समीक्षा अगस्त 2022

International Research Journal of Humanities and Interdisciplinary Studies
IRJHIS